पाठ2 दुर्बुद्धि:विनश्यति

पुराने समय मे मगध देश मे फुल्लोत्पल नाम का एक तालाब था | उस तालाब में दो हंस रहते थे, एक का नाम था संकट और दूसरे का नाम था विकट | उन दोनों हंसो के साथ एक कछुआ भी रहता था जिसका नाम था ,कंबुग्रीव |

तीनों मित्र बड़े ही आराम की जिंदगी जी रहे थे | कुछ दिन बाद कुछ मछुआरे उस तालाब पर आए | वे कहने -"हम लोग कल मछलियों और कछुए आदि को मारेंगे"|

यह सुनकर कछुआ दोनों हंसो से बोला -"मित्रों क्या तुम दोनों ने मछुआरों की बात सुनी है ? अब मैं क्या करूं ? तुम दोनों तो उड़ कर चले जाओगे और मैं यहां फंस गया" | दोनों हंस कहने लगे-" सुबह में जो उचित होगा वह करेंगे"| तभी कछुआ बोला – "नहीं ऐसा मत करो, मुझे बचाओ, ऐसा उपाय करो जिस प्रकार मैं दूसरी तालाब में चला जाऊं" | दोनों हंस कहने लगे- "अब इसमें हम दोनों क्या कर सकते हैं "?

कछुआ एक उपाय निकाला और बोला – "मैं तुम दोनों के साथ आकाश मार्ग से दूसरे स्थान पर जाने की इच्छा करता हूं" | दोनों हंस आश्चर्य के साथ बोले- " लेकिन, यह कैसे संभव है ?" तब कछुआ बोला – " तुम दोनों एक लकड़ी के टुकड़े को अपने चोच में पकड़ लेना, मैं उस लकड़ी के टुकड़े के मध्य भाग को अपने मुंह से पकड़ लूंगा और तुम दोनों उस डंडे को दोनों ओर से पकड़ कर उड़ जाना | और इस प्रकार हम सभी दूसरे तालाब में चले जाएंगे | "

फिर दोनों हंस बोलते हैं- यह उपाय तो ठीक लग रहा है परंतु यहां पर एक खतरा भी है| हमारे द्वारा ले जाए जाते हुए तुम्हें देखकर लोग तो कुछ जरूर कहेंगे यदि तुम उनकी बातों का उत्तर देते हो तो तुम्हारी मृत्यु निश्चित है | क्योंकि तुम्हारा मुंह खुल जाएगा और तुम नीचे गिर जाओगे और उनके द्वारा मार कर खा लिए जाओगे | फिर कछुआ बोलता है – तुम्हें मैं पागल दिखता हूं क्या ? मैं ऐसा कुछ भी नहीं करूंगा | मैं उत्तर बिल्कुल भी नहीं दूंगा | कुछ भी नहीं बोलूंगा | प्लीज मुझे लेकर चलो नहीं तो मछुआरे मुझे मार डालेंगे | इसलिए मैं जैसा बोलता हूं वैसा करो |

फिर दोनों हंस लकड़ी के डंडे को दोनों तरफ से पकड़कर उड़ जाते हैं और बीच में कछुआ लकड़ी को पकड़े हुए था | इस प्रकार तीनों उड़ते हुए आकाश मार्ग से जा रहे थे | रास्ते में लोगों ने देखा और उनके पीछे दौड़ने लगे | उनके पीछे दौड़ते हुए बोले -"अरे महान आश्चर्य है | दोस्तों के साथ एक कछुआ भी उड़ रहा है " ! कोई कहने लगा- " यदि या कछुआ किसी प्रकार नीचे गिर जाता है तो यहां पर ही पकाकर खा लूंगा | फिर दूसरा आदमी बोला – " तालाब के किनारे जलाकर के पकाकर खाऊंगा " | फिर कोई तीसरा बोलने लगा- " घर ले जाकर खाऊंगा" |

इस बात पर कछुआ को गुस्सा आ गया और उसने आव देखा ना ताव और फटाक से बोल दिया " तुम सब राख खा लो "| बस क्या था , उसी पल ही कछुआ के मुंह लकड़ी का डंडा छूट गया और वह नीचे पृथ्वी पर गिर पड़ा | ग्वालों ने यानी कि लोगों ने उस कछुए को मार डाला और उसे पकाकर खा लिया |

इसलिए कहा गया है – भलाई चाहने वाले मित्रों के वचन को जो प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार नहीं करता है, वह लकड़ी से गिरे हुए दुष्ट बुद्धि कछुए के समान नष्ट हो जाता है |

तो इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि हमें सही समय देखकर ही कुछ बोलना चाहिए | मूर्खों की तरह ज्यादा नहीं बोलना चाहिए |

Question 2:

एकपदेन उत्तरत-

(क) कूर्मस्य किं नाम आसीत्?

(ख) सरस्तीरे के आगच्छन्?

(ग) कूर्मः केन मार्गेण अन्यत्र गन्तुम् इच्छति?

(घ) लम्बमानं कूर्मं दृष्ट्वा के अधावन्?

Answer:

(क) कम्बुग्रीव।

(ख) धीवराः

(ग) कूर्मः आकाशमार्गेण अन्यत्र गन्तुम् इच्छति।

(घ) गोपालकाः

Question 3:

अधोलिखितवाक्यानि कः कं प्रति कथयति इति लिखत-

		कः कथयति	**कं प्रति कथयति**
यथा	प्रातः यद् उचितं तत्कर्तव्यम्।	हंसौ	कूर्मं प्रति
(क)	अहं भवद्भ्यां सह आकाशमार्गेण गन्तुम् इच्छामि।	----------	----------
(ख)	अत्र कः उपायः?	----------	----------
(ग)	अहम् उत्तरं न दास्यामि।	----------	----------
(घ)	यूयं भस्म खादत।	----------	----------

Answer:

		कः कथयति	**कं प्रति कथयति**
यथा	प्रातः यद् उचितं तत्कर्तव्यम्।	हंसौ	कूर्मं प्रति
(क)	अहं भवद्भ्यां सह आकाशमार्गेण गन्तुम् इच्छामि।	कूर्मः	हंसौ प्रति
(ख)	अत्र कः उपायः?	हंसौ	कूर्मम् प्रति
(ग)	अहम् उत्तरं न दास्यामि।	कूर्मः	हंसौ प्रति
(घ)	यूयं भस्म खादत।	कूर्मः	गोपालाकान् प्रति

Question 4:

मञ्जूषात: क्रियापदं चित्वा वाक्यानि पूरयत-

अभिनन्दति भक्षयिष्याम: इच्छामि वदिष्यामि उड्डीयते प्रतिवसति स्म

(क) हंसाभ्यां सह कूर्मोऽपि ----------।

(ख) अहं किञ्चिदपि न ----------।

(ग) य: हितकामनां सुहृदां वाक्यं न ----------।

(घ) एक: कूर्म: अपि तत्रैव ----------।

(ङ) अहम् आकाशमार्गेण अन्यत्र गन्तुम् ----------।

(च) वयं गृहं नीत्वा कूर्मं ----------।

Answer:

(क) हंसाभ्यां सह कूर्मोऽपि उड्डीयते ।

(ख) अहं किञ्चिदपि न वदिष्यामि ।

(ग) य: हितकामनां सुहृदां वाक्यं न अभिनन्दति ।

(घ) एक: कूर्म: अपि तत्रैव प्रतिवसति स्म ।

(ङ) अहम् आकाशमार्गेण अन्यत्र गन्तुम् इच्छामि ।

(च) वयं गृहं नीत्वा कूर्मं भक्षयिष्याम:।

Question 5:

पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) कच्छप: कुत्र गन्तुम् इच्छति?

(ख) कच्छप: कम् उपायं वदति?

(ग) लम्बमानं कूर्मं दृष्ट्वा गोपालका: किम् अवदन्?

(घ) कूर्म: मित्रयो: वचनं विस्मृत्य किम् अवदत्?

Answer:

(क) कच्छप: हंसाभ्यां सह आकाशमार्गेण अन्यत्र स्थाने गन्तुम् इच्छति।

(ख) कच्छप: उपायं वदति "युवां काष्ठदण्डम् चञ्चवा धारयतम्। अहं काष्ठदण्डमध्ये अवलम्ब्य युवाभ्यां पक्षबलेन सुखेन गमिष्यामि।"

(ग) लम्बमानं कूर्मं दृष्ट्वा गोपालका: अवदन् "हं हो! महदाश्चर्यम्। हंसाभ्यां सह कूर्मोऽपि उड्डीयते।"

(घ) कूर्म: मित्रयो: वचनं विस्मृत्य अवदत् "भस्म खादत"।

Question 6:

घटनाक्रमानुसारं वाक्यानि लिखत-

(क) कूर्मः हंसयोः सहायतया आकाशमार्गेण अगच्छत्।

(ख) गोपालकाः अकथयन्-वयं पतितं कूर्मं खादिष्यामः।

(ग) कूर्मः हंसौ च एकस्मिन् सरसि निवसन्ति स्म।

(घ) केचित् धीवराः सरस्तीरे आगच्छन्।

(ङ) कूर्मः अन्यत्र गन्तुम् इच्छति स्म।

(च) लम्बमानं कूर्मं दृष्ट्वा गोपालकाः अधावन्।

(छ) कूर्मः आकाशात् पतितः गोपालकैः मारितश्च।

(ज) 'वयं श्वः मत्स्यकूर्मादीन् मारयिष्यामः' इति धीवराः अकथयन्।

Answer:

(क) कूर्मः हंसौ च एकस्मिन् सरसि निवसन्ति स्म।

(ख) केचित् धीवराः सरस्तीरे आगच्छन्।

(ग) 'वयं श्वः मत्स्यकूर्मादीन् मारयिष्यामः' इति धीवराः अकथयन्।

(घ) कूर्मः अन्यत्र गन्तुम् इच्छति स्म।

(ङ) कूर्मः हंसयोः सहायतया आकाशमार्गेण अगच्छत्।

(च) लम्बमानं कूर्मं दृष्ट्वा गोपालकाः अधावन्।

(छ) गोपालकाः अकथयन्-वयं पतितं कूर्मं खादिष्यामः।

(ज) कूर्मः आकाशात् पतितः गोपालकैः मारितश्च।

Question 7:

मञ्जूषात: पदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

जलाशयम् अचिन्तयत् वृद्ध: दु:खिता: कोटरे वृक्षस्य सर्प: आदाय समीपे

एकस्य वृक्षस्य शाखासु अनेके काका: वसन्ति स्म। तस्य वृक्षस्य ---------- एक:

सर्प: अपि अवसत्। काकानाम् अनुपस्थितौ ---------- काकानां शिशून् खादति स्म।

काका: ---------- आसन्। तेषु एक: ---------- काक: उपायम् ----------।

वृक्षस्य ---------- जलाशय: आसीत्। तत्र एका राजकुमारी स्नातुं ---------- आगच्छति।

शिलायां स्थितं तस्या: आभरणम् ---------- एक: काक: वृक्षस्य उपरि अस्थापयत्।

राजसेवका: काकम् अनुसृत्य ---------- समीपम् अगच्छन्। तत्र ते तं सर्पं च अमारयन्।

अत: एवोक्तम्-उपायेन सर्वं सिद्धयति।

Answer:

एकस्य वृक्षस्य शाखासु अनेके काका: वसन्ति स्म। तस्य वृक्षस्य कोटरे एक:

सर्प: अपि अवसत्। काकानाम् अनुपस्थितौ सर्प: काकानां शिशून् खादति स्म।

काका: दु:खिता: आसन्। तेषु एक: वृद्ध: काक: उपायम् अचिन्तयत्।

वृक्षस्य समीपे जलाशय: आसीत्। तत्र एका राजकुमारी स्नातुं जलाशयम् आगच्छति।

शिलायां स्थितं तस्या: आभरणम् आदाय एक: काक: वृक्षस्य उपरि अस्थापयत्।

राजसेवका: काकम् अनुसृत्य वृक्षस्य समीपम् अगच्छन्। तत्र ते तं सर्पं च अमारयन्।

अत: एवोक्तम्-उपायेन सर्वं सिद्धयति।